

साझा। हम समाते हैं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिले, तो इसे तह करके लौटाना।

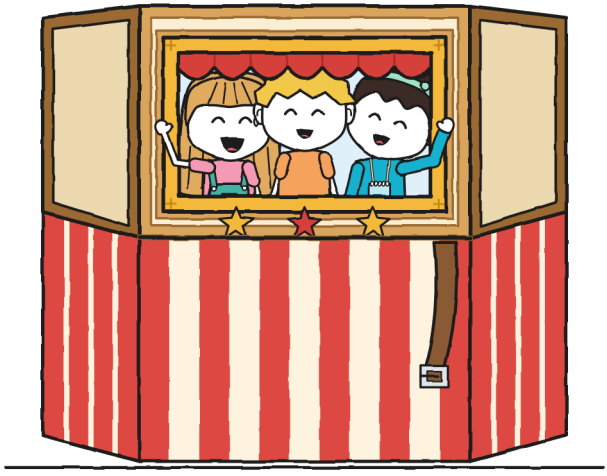
सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उस चीज़ पर लगती है जो सिर्फ़ कहानी में होती है: असली ड्रैगन नहीं होते और पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली दुलाई के लिए आख़िरी पन्ना देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 6

एक जगह, हम तीन

LinguAula



(गुनी की डायरी)

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 6
एक जगह, हम तीन

सीरीज़ की छठी किताब। पिछली किताबें: “यह पार्सल काटता है”, “बादल गरजने से पहले न खोलें”, “वापस आया, प्लीज़”, “यहाँ नहीं, चूरा!” और “एक केक, हम दो”।

लेखन और चित्र: LinguAula

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

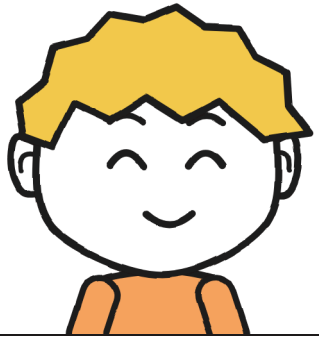
फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।



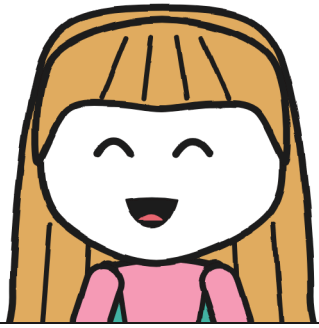
हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

यह तीन लोग उठाते हैं। मैंने हत्था चुन लिया। –ज.

कौन कौन है



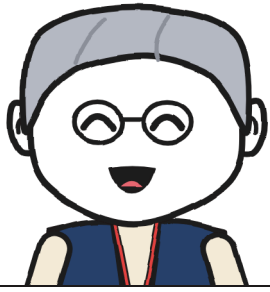
गुनी। सेंटीमीटर में नापता है। इस हफ़्ते एक और चीज़ भी गिनता है।



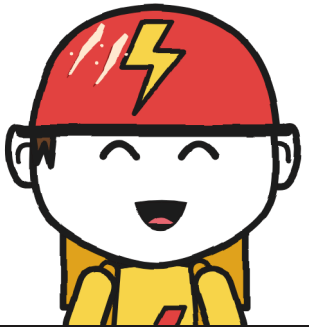
जूलिता। उसे रास्ता पता है। उसे समझाना दूसरी बात है।



नोआ। जूलिता की पुरानी दोस्त। क़दमों से नापती हैं: क़दम हमेशा उसके साथ रहते हैं।



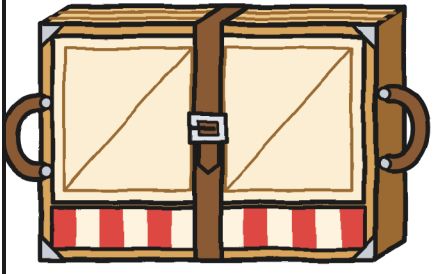
आइरीन। थिएटर वर्कशॉप चलाती हैं। रास्ता नहीं बतातीं: "रुको" कहती हैं।



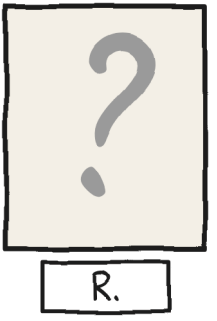
टोन्यो। "बिजली" का और दुकान का। समय नापता है, राय नहीं देता। लगभग।



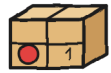
माशा। पार्सल उधार देती हैं। डिब्बा नहीं छोड़तीं।



नं. 6। एक थिएटर जो एक डिब्बे में समा जाता है। पट्टा कोई न पकड़े, तो जहाँ मन करे वहाँ खुल जाता है।



R. प्रेषक। इस बार इन्वेंटरी में एक लाइन छूट गई है।



अध्याय 1

तीन लोग क्यों चाहिए?

डायरी नंबर 5 दो सुइयों पर ख़त्म हुई थी, जो एक घड़ी में थीं, और मैंने उसे वैसे ही बंद कर दिया, किसी से सुई हटाने को कहे बिना। ख़त्म हुई डायरी वैसी ही रहती है जैसी आप छोड़ें। यही उनकी अच्छी बात है: अब उनसे कोई बहस नहीं कर सकता।

नंबर 6 नारंगी है। मंदारिन वाला नारंगी, जो अगर जल्दी न हो तो एक ही बार में छिल जाता है, और एक कोने में दुकान की मुहर भी है। मारा उसे काउंटर पर गुलाबी वाली के बग़ल में रखकर पीछे के कमरे में चली गईं, उन डिब्बों को सजाने जो पहले से सजे हुए थे। मारा डायरियाँ हाथ में नहीं देतीं: वे उन्हें वहाँ रख देती हैं जहाँ आपकी नज़र जाएगी।

पहले पन्ने की मेरी एक परंपरा है। नंबर 2 पर मैंने लिखा था ऑफ़िशियल; नंबर 3 पर, सीक्रेट; नंबर 4 पर, फ़ाइनल; नंबर 5 पर, शांत। चार शब्द, चारों ताले वाले, और चारों जूलिता ने सबसे पहले पढ़े, मुझसे भी पहले। इस बार मैंने ऐसा शब्द ढूँढा जो पहले से इस बात का हिसाब रखता हो।

ऊपर मैंने लिखा डिलीवरी डायरी 6 · गुनी की, जो कि लिखने का क़ायदा है। उसके नीचे, बस एक शब्द:

साझा।

और मैंने आधा पन्ना ख़ाली छोड़ दिया, कि कहीं ज़रूरत पड़ जाए। किस बात की ज़रूरत, यह मुझे नहीं पता था। जल्दी ही पता चल गया: वह एक मिनट भी ख़ाली नहीं रहा।

जूलिता काउंटर के उस पार थी। उसने मुझसे डायरी माँगी नहीं; उसने एक उँगली से उसे खींच लिया, हरा मार्कर खोला और आधे पन्ने पर इतने बड़े अक्षरों में लिखा कि वे हाशिये तक पहुँच गए, फिर सोचा और हाशिये में भी आगे बढ़ गई। फिर उसने मार्कर बंद किया, चेहरे पर «मैंने नहीं किया» वाला भाव लिए, जो उस दुकान में अब सबका चेहरा है।

मैंने पहला पन्ना अपनी लिखावट से साझा कर लिया। —ज.

मैंने नापा कि उसने कितनी जगह ली: नीचे का पूरा आधा। मेरा शब्द, अपने चारों ओर छोड़ी हुई सारी हवा के साथ, ऊपर वाले आधे में था। दो आधे। मुझे यह बँटवारा बड़ा वाजिब लगा।



हमेशा की तरह, उनके लिए जो इस डायरी तक बाक़ी डायरियों से गुज़रे बिना पहुँचे हों। दुकान का नाम नामुमकिन डिलीवरी है और वह मारा की है, जो जादूगरनी हैं, बैंगनी टोपी पहनती हैं और जिनकी मुहर, लगते ही, बुझी मोमबत्ती की गंध वाली चिंगारियाँ छोड़ती है। बाईं तरफ़ की शेल्फ़ पर वे लौटाए हुए पार्सल रखती हैं: ऐसे पार्सल जिन्हें कोई पहुँचा नहीं पाया, सब R. के भेजे हुए। अगर पाने वाला किसी पार्सल के लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो भोर होते ही पार्सल उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है। वे बीस थे। जूलिता और मैं पाँच पहुँचा चुके हैं: एक ड्रैगन का अंडा, पैरों वाले बीज, एक घंटी, एक पहुँचने वाला दल और एलिया की बेकरी के लिए एक स्टैंड। दीवार पर, हरे अक्षरों में, लिखा है बाक़ी 15। रायो वाला टोन्यो अपनी जगह पर है, उलटे डिब्बे में, स्टूलों के पास। फ़िलहाल।

सोमवार को, एलिया के नोट के अगले दिन, मैं स्कूल से निकला और सीधा दुकान गया। जूलिता काउंटर पर हाथ में एक लिफ़ाफ़ा लिए मेरा इंतज़ार कर रही थी। वह न हरा था, न नीला, जो लिफ़ाफ़ों के वे रंग हैं जिन्हें मैं जानता हूँ। वह फ़िरोज़ी था और बंद था। उसने उसे दो उँगलियों से, एक कोने से पकड़ रखा था, जैसे वह जलता हो।

“डाकिया लाया है। लिखा है ‘नामुमकिन डिलीवरी की दुकान’। मैंने काफ़ी देर से नहीं खोला।”

“कितनी देर से?”

“अट्ठाईस मिनट,” टोन्यो ने अपने डिब्बे से घड़ी देखते हुए कहा। “मोहल्ले का रिकॉर्ड।”

उसने दुकान के अंदर भी हेलमेट पहन रखा था, जिस पर पंजे की दो छोटी लकीरें थीं, और घड़ी आस्तीन के ऊपर बाँध रखी थी, ताकि आस्तीन चढ़ाने में वक़्त ज़ाया न हो।

मैं जूलिता को जानता हूँ। उसके हाथ में बंद लिफ़ाफ़ा उतनी ही देर टिकता है जितनी देर उसे उसका फ़्लैप ढूँढने में लगती है। अट्ठाईस मिनट सब्र नहीं था। वह कुछ और था, और मुझे नहीं पता कि क्या।

यह मेरा नहीं था। जो लिफ़ाफ़े मेरे नहीं होते, वे तिगुने भारी लगते हैं। —ज.

मारा ने उसे नाख़ून से खोला, ज़रूरत से ज़्यादा काग़ज़ फाड़े बिना। चिट्ठी साफ़ लिखावट में थी, किसी बड़े की लिखावट, उन लोगों जैसी जिनकी पंक्ति आख़िर में टेढ़ी नहीं होती:

“मैं आइरीन हूँ, मोहल्ला केंद्र के थिएटर वर्कशॉप की प्रभारी। इन्वेंटरी अपडेट करते समय मुझे एक पंक्ति मिली: ‘तह होने वाला छोटा थिएटर: पाना बाक़ी’। क्या वह आपके पास है? शनिवार 31 को मोहल्ले की प्रतियोगिता है। अगर

छोटा थिएटर तह करके तीन लोगों की टीम के साथ हमारे आँगन में पहुँचे, तो मैं वहीं दस्तख़त कर दूँगी। नोआ की टीम में तीन की जगह है और अभी सिर्फ़ वही है।"

उसके नीचे, किसी और लिखावट में, छोटी और सीधी, फ़िरोज़ी रंग में:

"जूलिता: मैं ही हूँ! अब मैं थिएटर करती हूँ। किसी ऐसे को ले आओ जो पार्सलों के बारे में जानता हो। —नोआ।"

जूलिता ने दस्तख़त पढ़े और उसका होंठ एक तरफ़ से ऊपर उठ गया, बस एक तरफ़ से, जैसे तब जब उसे कुछ याद आता है जो वह बताने वाली नहीं होती। उसने "नोआ" धीरे से कहा, ऐसे जैसे किसी गली का नाम लिया जाता है जिससे आप हज़ार बार गुज़रे हों।

"पार्सलों के बारे में जानने वाला।" वह मैं था। "पार्सल" मुझे अच्छा लगा। "कोई" कम।



पाँच बजे दोनों आईं।

आइरीन के पास एक फ़ाइल थी, जेबों से भरा गहरा नीला जैकेट और गले में लटकी एक सीटी। उनके बाल छोटे और सलेटी थे और गोल चश्मा, जिससे उन्होंने दुकान को शेल्फ़-दर-शेल्फ़ देखा, उस इंसान की तरह जो बिना कहे इन्वेंटरी कर रहा हो। नोआ के गले में रस्सी से एक छोटी कॉपी लटकी थी और कान के पीछे एक फ़िरोज़ी पेंसिल। बाल, घुँघराले, ऊँचे जूड़े में, पुदीने जैसे हरे स्कार्फ़ से बँधे; स्वेटर फ़िरोज़ी, लिफ़ाफ़े जैसा। उसमें सब कुछ इस तरह रखा लगता था कि कुछ ढूँढना ही न पड़े।

जूलिता काउंटर के पीछे से, फाटक खोले बिना, नीचे से निकली और दोनों गले लगीं। इतनी देर गले लगीं कि मुझे नापने का वक़्त मिल गया: ग्यारह

सेकंड। मैं एक तरफ़ खड़ा रहा, डायरी के साथ। डायरी इस काम के भी आती है: हाथ में कुछ रखने के।

“यह गुनी है,” जूलिता ने कहा। “पार्सलों के बारे में जानता है।”

“नमस्ते, पार्सलों के बारे में जानने वाले गुनी,” नोआ ने कहा। और उसने मेरा नाम अपनी कॉपी में लिख लिया।

पूरा लिखा, उस नए नाम के साथ जो उसने अभी मुझे दिया था। जहाँ मैं खड़ा था वहाँ से मैंने देखा कि मैं पन्ने की दूसरी पंक्ति में था। पहली पंक्ति में “जूलिता” था, और उसके नीचे एक लकीर, उन चीज़ों की तरह जो हो चुकी हों।



मारा नीले स्टूल पर चढ़ीं और अपनी शेल्फ़ से नं. 6 उतारा। बाक़ी सबके जैसा एक डिब्बा, न बड़ा, न छोटा। लेबल पर टाइप की हुई पाँच पंक्तियाँ थीं: नं. 6। आँगन का वर्कशॉप। दोनों दरवाज़ों से प्रवेश। तह करके पहुँचाएँ। और नीचे, हमेशा की तरह, प्रेषक: R.। चारों तरफ़ वापस किया गया की नौ मुहरें।

“नौ मुहरें,” जूलिता ने कहा।

“‘दोनों दरवाज़े’,” नोआ ने पढ़ा। “कौन से दो दरवाज़े?”

आइरीन को नहीं पता था। मारा को भी नहीं। मैंने उसे प्रश्नचिह्न के साथ लिख लिया, जो मैं तब लिखता हूँ जब मुझे कुछ नहीं पता और चाहता हूँ कि दर्ज रहे कि मैंने ग़ौर किया।

“मैं उसे नौ बार ले गई,” मारा ने कहा। “सोमवार को सिलाई वाले दरवाज़ा खोलते थे। बुधवार को कोरस। शुक्रवार को शतरंज। ‘वर्कशॉप? यहाँ नहीं।’ वर्कशॉप के लिए कोई दस्तख़त नहीं करता था।”

वे बोल रही थीं और मैंने उसे तीन चौखानों में बनाया: मारा, डिब्बा बग़ल में दबाए, उसी दरवाज़े के सामने, और दरवाज़े पर, बारी-बारी से, धागे वाली सुई, एक सुर का निशान और शतरंज का घोड़ा, जो कुछ नहीं बोल रहा था क्योंकि शतरंज में चुप रहा जाता है। नीचे, भोर में दुकान की खिड़की से अंदर आता डिब्बा। नौ बार।

“थिएटर आँगन में रिहर्सल करता है,” आइरीन ने कहा। “और आँगन में घंटी नहीं है।”

उन्होंने फ़ाइल खोली और मारा को केंद्र की मुहर वाला एक पन्ना दिखाया। मारा ने उसे नाक बहुत पास रखकर पढ़ा, जो उनके पढ़ने का वह तरीक़ा है जब वे किसी बात को गंभीरता से लेने वाली हों।

“अब यह रजिस्टर में है: ‘थिएटर वर्कशॉप। प्रभारी: आइरीन’। एक वर्कशॉप के लिए अब कोई दस्तख़त करता है।”

“अब जब दस्तख़त करने वाला कोई है, तो मारा इसे अपने डिब्बे में क्यों नहीं ले जातीं?” जूलिता ने पूछा।

“मैं इसे अपने डिब्बे में नौ बार ले जा चुकी हूँ,” मारा ने कहा। “अब शर्तें वह रखेगा जो इसे लेगा।”

“तह होने वाला छोटा थिएटर चौक-चौराहों पर ले जाने के लिए है,” आइरीन ने कहा। “मेरे बच्चे इसे सड़क पर उठा सकें। न उठा सकें, तो यह मेरे काम का नहीं। और जो मेरे काम का नहीं, उस पर मैं दस्तख़त नहीं करती।”

“यह मैंने एक बेकरी में सुना था,” मारा ने कहा।

मेरे पास चिट्ठी पढ़ते ही से एक सवाल था, और मैंने उसे पूछ लिया, उससे पहले कि वह घिस जाए।

“और तीन लोग क्यों चाहिए?”

मैंने सच में पूछा था। एक गठरी, दो हत्थे; दो लोग, हर हत्थे पर एक। मैंने उँगलियों पर गिना था और दो आए थे।

कोई नहीं हँसा। आइरीन ने चश्मे के ऊपर से मुझे देखा, जैसे कोई ऐसे पुरज़े को देखता है जो जितना लगता था उससे बेहतर बैठता है।

“अच्छा सवाल है। मंगलवार को आँगन में, इसका जवाब तुम लोग मुझे दोगे।”

मारा ने अपनी किताब खोली और शर्तें लिखीं। मारा की शर्तें हमेशा एक हाथ में समा जाती हैं; मैंने अपने हाथ से गिनीं और अँगूठा बच गया:

- नं. 6: रिहर्सल के लिए उधार।
- आइरीन के साथ निकलेगा या मेरे साथ।
- तह होकर लौटेगा।
- यहीं सोएगा।

लेबल डिब्बे में रहेगा, और डिब्बा मारा के पास।

अगर यह शेल्फ़ पर सोता है, तो भोर में इसके पास लौटने की कोई जगह नहीं। यह अब भी नौ मुहरों पर है। मैंने पूछा था। –ज.



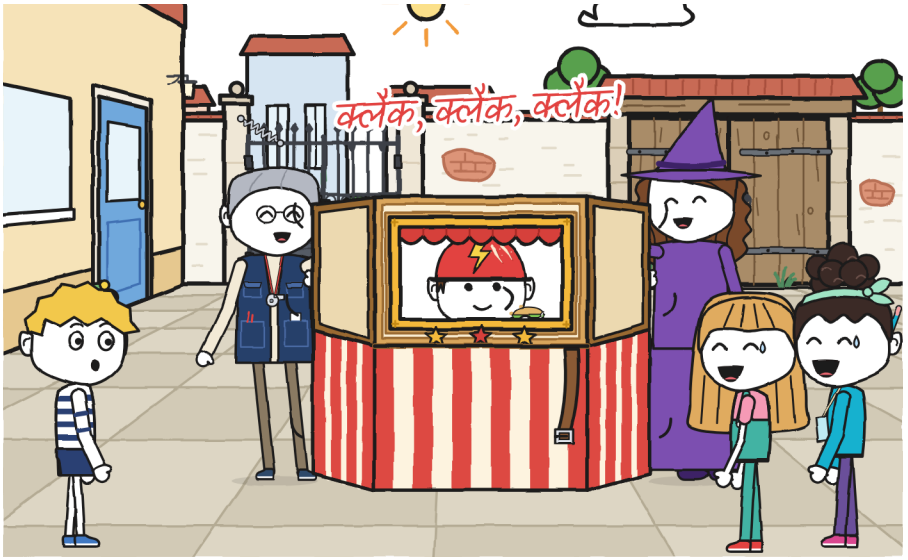
मंगलवार को हम मोहल्ला केंद्र के आँगन में गए। फुटपाथ से वहाँ लोहे के फाटक से अंदर जाते हैं, जिस पर रंग की बहुत सारी परतें थीं, और जो अपने आप बंद होता है: आप उसे छोड़ते हैं और वह धीरे-धीरे लौटता है, क्लिक की आवाज़ तक, उस कुत्ते की तरह जो बिना कहे बैठ जाता है।

मारा ने डिब्बा ज़मीन पर रखा और ढक्कन खोला। बाहर आते ही छोटा थिएटर बढ़ गया, जैसे एलिया का स्टैंड बढ़ा था। मैं अब डरता नहीं: मैं टेप निकाल लेता हूँ।

बंद होने पर वह लकड़ी के पैनलों और कपड़े की एक चपटी गठरी था, हर तरफ़ एक हत्था और एक पट्टा, जो तीन छेदों वाले बकल से गुज़रता था। एक मीटर गुणा सत्तर सेंटीमीटर, और मोटाई में एक बित्ता। फाटक का एक पल्ला खुला हो तो नब्बे सेंटीमीटर। मोटाई की तरफ़ से वह फाटक से निकल जाता था। यह आसान हिस्सा था।

सबसे पहले आइरीन देखना चाहती थीं कि वह पूरा है या नहीं। उन्होंने पट्टा खोला और गठरी घुमाई। पैनल अपने आप खुल गए, अपने वज़न से, एक के बाद एक: क्लैक, क्लैक, क्लैक। तीन दीवारों वाला एक मंच, एक छोटा परदा और पिछले पैनल में चौखटे वाली एक खिड़की।

खिड़की से टोन्यो दिख रहा था, जो फुटपाथ से एक सैंडविच लिए गुज़र रहा था। उसका मुँह भरा था। वह नमस्ते नहीं कर सका। वह एक पल को रुक गया, चौखटे में, हेलमेट पहने हुए और एक गाल दूसरे से ज़्यादा फूला हुआ, जैसे दोपहर के खाने के वक़्त बनी किसी बड़े आदमी की तस्वीर।



“पूरा है,” आइरीन ने कहा। “वर्कशॉप का नियम: हाथ हत्थों पर। हिंज पर कभी नहीं। और मोड़ों पर कोई पट्टा पकड़ता है।”

मैंने उसे ज्यों का त्यों लिख लिया।

आइरीन और मारा ने उसे तह किया और पट्टा कस दिया।

“हम आज़माएँगी,” जूलिता ने कहा। नोआ तब तक दूसरे हत्थे पर थी।

उन्होंने तय करने के लिए एक-दूसरे को देखा नहीं। एक-दूसरे से कहा भी नहीं: हर कोई अपनी तरफ़ चली गई, जैसे हर रोज़ की कुर्सी की तरफ़ जाया जाता है।

उन्होंने तीन तक गिना और उठा लिया। उठ गया। उन्होंने आँगन का एक चक्कर लगाया, धीरे-धीरे, कोहनियाँ थोड़ी खुली, और छोटा थिएटर उन दोनों के बीच बिना हिले चलता रहा, किसी सलीक़े से उठाई ट्रे की तरह। वे फाटक तक पहुँचीं। फाटक बंद था।

जूलिता ने उसे देखा। नोआ ने उसे देखा। उनके चार हाथ थे और चारों भरे हुए थे।

मैं दो मीटर दूर खड़ा था, मेरे दोनों हाथ ख़ाली थे और एक डायरी थी।

आइरीन, पीछे, फ़ाइल को सीने से लगाए, कुछ नहीं बोलीं। न "इनकी मदद करो", न "तुम"।

मैंने फाटक को पीठ से रोक लिया। वे निकल गईं। आइरीन ने फ़ाइल में कुछ लिखा।



उस शाम मैंने इस डायरी का यंत्र बनाया। यह मेरे करियर का पाँचवाँ है, काँपमापी, लालमापी, यहाँमापी और शोरमापी के बाद, और पहला जो एक इंसान को नहीं, एक साथ कई को नापता है। मैंने उसका नाम रखा तीन का मीटर, «किस हिस्से में कौन क्या करता है»। हर हिस्से के लिए एक पंक्ति और तीन खाने, हर खाने में एक छोटा चित्र:

- उठाना: दो हाथ, दो हत्थे।
- राह दिखाना: बताना कहाँ से और कब।
- रास्ता खोलना: दरवाज़े, कर्ब, लोग।

पहली पंक्ति में, «आँगन, पहली कोशिश», मैंने लिखा «जूलिता और नोआ», «जूलिता और नोआ» और एक ख़ाली खाना। दूसरी में, «आँगन, दूसरी कोशिश», वही, पर तीसरे खाने में मैंने लिखा «गुनी»।

दो नाम दोहराए हुए और एक ख़ाली खाना: नहीं निकला। खाना भरा हुआ: निकला। मेरे पास आइरीन के लिए जवाब था, और वह मेरा अपना था।

और मैंने एक और बात लिखी, और छोटी: «फाटक को एक पत्थर भी रोक सकता है»।

मैंने उसे पेंसिल पर लगभग ज़ोर दिए बिना लिखा।



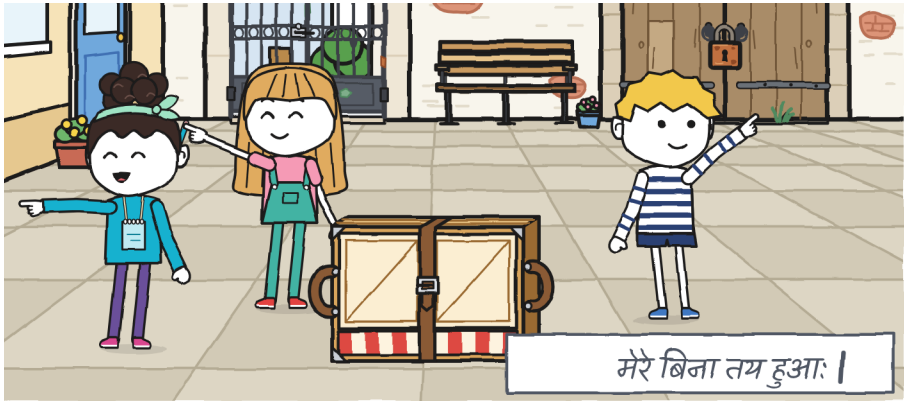
लेबल को समझना बाक़ी था।

“दोनों दरवाज़े, यानी फाटक के दोनों पल्ले,” जूलिता ने कहा।

“दोनों खोलने होंगे,” नोआ ने कहा।

“हम पहले बाहर से दीवार नाप सकते हैं,” मैंने कहा।

हम तीनों ने एक साथ इशारा किया। जूलिता ने, फाटक की ओर। नोआ ने, वर्कशॉप वाले कमरे की ओर। मैंने, सड़क की ओर।



“बाद में,” दोनों ने कहा।

उन्होंने एक साथ कहा और एक ही सुर में, जैसे रटा हुआ हो। रटा ही था, मेरा ख़याल है। बरसों से।

मैं अकेला गया। मैं फाटक से निकला, जो मेरे पीछे क्लिक के साथ बंद हो गया, और इंची टेप से हिस्से-दर-हिस्से नापता हुआ, घुटने पर डायरी टिकाए हर संख्या लिखता हुआ, दीवार का चक्कर लगा आया। दीवार लंबी थी और एक

गली में खुलती थी जिसमें ठहरे पानी की गंध थी। और वहाँ, मोड़ पर, मुझे एक चीज़ मिली।

मैं जल्दी लौटा, वह चीज़ दिमाग़ में लिए और टेप अभी लपेटे बिना, एक मीटर पीला फुटपाथ पर घसीटता हुआ। जब मैं अंदर आया, जूलिता और नोआ किसी ऐसी बात पर हँस रही थीं जो मेरे मोहल्ले में आने से पहले की थी। वे कंधों से हँस रही थीं, आवाज़ किए बिना, और नोआ जूलिता की बाँह छूकर उसे रोक रही थी, और जूलिता रुक नहीं रही थी।

मैंने मुँह खोला।

"तय हो गया, गुनी," जूलिता ने कहा। "दोनों पल्ले हैं।"

पन्ने के निचले कोने में, छोटा और पेंसिल से, मैंने लिखा: मेरे बिना तय। और बग़ल में एक छोटी लकीर। मैंने उसे तब लिखा जब मेरा मुँह अब भी खुला था।

मैंने मुँह बंद किया। और डायरी भी।

वह लकीर मैंने दो दिन बाद देखी। वह मेरी थी। –ज.

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

हर कोई अपने साइज़ में। छोटा थिएटर वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ की गतिविधियों के साथ)*